भजन

तर्ज–तेरे संग जीना तेरे संग मरना

देखा लाड तेरा देखी साहेबी तेरी
और नहीं कुछ तेरे सिवा बस तूं ही तूं है पिया

1–निजधाम की हर शै में पिया,बस तेरे ही नूर का पसारा है
कुल आलम में तेरा नूर भरा, तेरे इश्क की सब बोलें बोली
क्या रूहें क्या श्यामा जी,सब तेरे तन हैं पिया

2–सुरता अपनी को जगाया है,रूह का तालू पकड़ कर पिलाया है
कैसा जाम ये जग से निराला है, वहीं जाने जो पीने वाला है
कौन नार हम कौन खसम की कहां है घर अपना

3– तेरा इश्क तो सबसे निराला है, तेरी साहेबी का पारावार नहीं
अक्षर से परे अक्षरातीत हो तुम, अंगनाओं के बस प्रीतम प्यारे
इश्क तेरा और नूर तेरा बस तूं ही तूं है पिया